

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 12th



aglasem.com

Class : 12th
Subject : Psychology
Chapter : 4
Chapter Name : मनोवैज्ञानिक विकार

Q1 अवसाद और उन्माद से सम्बंधित लक्षणों की पहचान कीजिये।

Answer. मानसिक विकारों में सर्वाधिक प्रचलित तथा मान्यता प्राप्त अवसाद(डिप्रेशन) है। अवसाद में कई प्रकार के नकारात्मक भावदशा और व्यवहार परिवर्तन होते हैं। अवसाद को एक लक्षण या एक विकार कह सकते हैं। दैनिक जीवन में हम अक्सर अवसाद शब्द का उपयोग करते हैं जो किसी महत्वपूर्ण क्षति के बाद की सामान्य भावना होती है, जैसे- किसी संबंध का टूट जाना या किसी महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल होना। मुख्य भावदशा विकारों में अवसादी, उन्मादी तथा द्विध्रुवीय विकार होते हैं। मुख्य अवसादी विकार(मेजर डिप्रेशन डिऑर्डर) में अवसादी भावदशा की अवधि होती है अधिकांश गतिविधियों में अभिरुचि या आनंद नहीं रह जाता। साथ ही अन्य लक्षण भी हो सकते हैं, जैसे- शरीर भार में परिवर्तन, लगातार निद्रा से संबंधित समस्याएं, थकान, स्पष्ट रूप से चिंतन करने में असमर्थता, क्षोभ, बहुत धीरे-धीरे कार्य करना तथा मृत्यु और आत्महत्या के विचारों का आना। इसके अतिरिक्त अन्य लक्षण ऐसे भी हो सकते हैं, जैसे- दोष या निकम्मेपन की भावना का होना।

द्विध्रुवीय विकार में उन्माद और अवसाद दोनों समाहित होते हैं जो वैकल्पिक रूप से उपस्थित रहते हैं और कभी-कभी सामान्य मनोदशा के समय बाधित होते हैं। उन्माद के प्रकरण अपने आप बहुत कम प्रकट होते हैं, वे प्रायः अवसाद के साथ विकल्प के रूप में रहते हैं। द्विध्रुवीय भावदशा विकार को पहले उन्माद अवसाद विकार कहा जाता था। द्विध्रुवीय और संबंधित विकारों के प्रकार में कुछ उदाहरण शामिल हैं, जैसे- द्विध्रुवीय I विकार और द्विध्रुवीय II, चक्रविक्षिप्ति विकार।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q2 अतिक्रियाशील वाले बच्चों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Answer. बाल्यावस्था के विकारों की चर्चा करते हुए, अवधान-न्यूनता अतिक्रिया विकार(अटेंशन डिफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिऑर्डर(ADHD), स्वलीनता वर्णक्रम विकार, बौद्धिक अशक्तता तथा विशिष्ट अधिगम विकार पर ध्यान देना आवश्यक हो जाता है नहीं तो यह आगे चलकर, जैसे जैसे बच्चा प्रौढ़ावस्था की ओर बढ़ता है, गंभीर और दीर्घकालिक विकारों को जन्म देते हैं। अवधान न्यूनता अतिक्रिया विकार के दो मुख्य लक्षण हैं। अनवधान(इनअटेंशन) एवं अतिक्रियाशीलता आवेगशीलता(हाइपरएक्टिविटी इंपल्सिविटी)। जो बच्चे अन्यमनस्क(इनअटेंटिव) होते हैं वे काम या खेल के समय मानसिक प्रयास को देर तक बनाए नहीं रख पाते। उन्हें अपना ध्यान केवल एक वस्तु पर लगाने में या अनुदेशकों का बड़ी नहीं होती है। जो बच्चे आवेगशील (इंपल्सिव) होते हैं वे अपनी तात्कालिक प्रतिक्रियों पर नियंत्रण नहीं कर पाते हैं या काम करने से पहले सोच नहीं पाते। वह प्रतीक्षा करने में कठिनाई महसूस करते हैं या अपनी बारी आने की प्रतीक्षा नहीं कर पाते, उन्हें अपनी तात्कालिक प्रलोभन को रोकने में कठिनाई महसूस होती है। अतिक्रिया(हाइपरएक्टिविटी) के भी कई रूप होते हैं। ए.डी.एच.डी. वाले बच्चे हमेशा कुछ न कुछ करते रहते हैं। एक पाठ के समय स्थिर या शांत बैठे रहना उनके लिए बहुत कठिन होता है। बच्चा चुलबुलाहट कर सकता है, उपद्रव कर सकता है, कमरे में ऊपर चढ़ सकता है या यूँ ही कमरे में निरुद्देश्य दौड़ सकता है। माता पिता और अध्यापक ऐसे बच्चे के बारे में कहते हैं कि उनके पैरों में चक्की लगी है, हमेशा चलता रहता है तथा लगातार बातें करता रहता है।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q3 मद्य जैसे मादक द्रव्य के सेवन के क्या परिणाम होते हैं?

Answer. एथाइल अल्कोहल मस्तिष्क के उन हिस्सों को सूचित करता है जो निर्णय और अवरोध को नियंत्रित करते हैं। जो लोग मद्य या शराब का दुरुपयोग करते हैं वे काफी मात्रा में शराब का सेवन नियमित रूप से करते हैं तथा कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए इस पर निर्भर रहते हैं। धीरे-धीरे शराब पीना उनके सामाजिक व्यवहार तथा सोचने और काम करने की क्षमता को प्रभावित करने लगता है। कई लोगों में शराब का दुरुपयोग उस पर निर्भरता की सीमा तक हो जाता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि उनका शरीर को सहन करने की क्षमता विकसित कर लेता है तथा उन्हें वही प्रभाव पाने के लिए ज्यादा मात्रा में शराब पीनी पड़ती है। जवे शराब पीना बंद कर देते हैं तो उन्हें भी विनिवर्तन अनुक्रियाओं का अनुभव होता है। मद्यव्यसन्ता करोड़ों परिवारों, सामाजिक संबंधों और जीविकाओं को बर्बाद कर देती है। शराब पीकर गाड़ी चलाने वाले कई सड़क दुर्घटनाओं के जिम्मेदार होते हैं। मध्यव्यसनिता से ग्रसित लोगों के बच्चों पर भी इसका गंभीर प्रभाव पड़ता है। इन बच्चों में मनोवैज्ञानिक समस्याओं की उच्च दर पाई जाती है, विशेषकर दुश्चिंता, अवसाद, दुर्भिति और मादक द्रव्यों के सेवन संबंधी विकार। शराब पीना शारीरिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से खराब कर सकता है। स्वास्थ्य और मनोवैज्ञानिक क्रियाकलापों पर शराब के दुष्प्रभाव भी होते हैं।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q4 क्या विकृत शरीर प्रतिमा भोजन विकार को जन्म दे सकती है? इसके विभिन्न रूपों का वर्गीकरण कीजिए।

Answer. विकारों का एक और समूह जिसमें युवा लोगों की विषयकर रुचि होती है, वह भोजन विकार है। इनमें क्षुधा आभाव, (anorexia disorder), क्षुधतिशयता (bulimia nervosa), अनियंत्रित भोजन (binge eating) सम्मिलित है। क्षुधा अभाव आदमी को अपनी शरीर के बारे में गलत धारणा होती है जिसके वजह से वह अपने को वजन वाला समझने लगता है। अक्सर खाने को मना करना, अधिक व्यायाम बाध्यता का होना, तथा साधारण आदतों को विकसित करना, जैसे दूसरों के सामने न खाना- इनसे व्यक्ति काफी मात्रा में वजन घटा सकता है और मृत्यु की स्थिति तक अपने को भूखा रख सकता है। क्षुधतिशयता, में व्यक्ति बहुत अधिक मात्रा में खाने लगता है बाद रचक और मूत्र वर्धक दवाओं के सेवन से या उल्टी करके, खाने को अपने शरीर से साफ कर सकता है। व्यक्ति पेट साफ होने के बाद तनाव और नकारात्मक संवेमोंक से अपने को मुक्त महसूस करता है। अनियंत्रित भोजन में अत्यधिक भोजन करने का प्रसंग बारंबार पाया जाता है। व्यक्ति में सामान्य की तुलना में जल्दी-जल्दी खाने की आदत होती है और वह तब तक खाता रहता है जब तक कि उसे महसूस होता है कि वह जरूरत से ज्यादा खा चुका है।

असल में, बहुत अधिक खाना उसी स्थिति में खाया जाता है जबकि व्यक्ति को भूख नहीं लगी होती। वव्यसनात्मक व्यवहार, चाहे इसमें उच्च कैलोरी वाला भोजन करना जिससे अत्यधिक वजन बढ़ जाता है या मत दिया कोकेन का दुरुपयोग शामिल है जो आज के समाज में सबसे अधिक गंभीर समस्या है, इसे विशेष रूप से हमारे समाज से दूर करना चाहिए।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q5 "चिकित्सक व्यक्ति के शारीरिक लक्षणों को देखकर बीमारी का निदान करते हैं" मनोवैज्ञानिक विकारों का निदान किस प्रकार किया जाता है?

Answer. मनोवैज्ञानिक, आचार विचार पर गहन चिंतन करते हुए आदमी के व्यवहार को पढ़ता है सोचता है और पहले के धारणाओं के आधार पर उसके बीमारी का पहचानता है तथा उसे दूर करने के लिए अलग अलग तरह के पैंतरे आजमाता है। जैसे चिकित्सक अलग अलग बीमारी के लिए एक ही दवाई नहीं देता वैसे ही मनोवैज्ञानिक भी अलग अलग मानसिक विकारों के लिए अलग अलग तकनीक अपनाता है। मनोवैज्ञानिक विकारों को समझने के लिए एक संक्षिप्त विवरण चाहिए होता है। मनोवैज्ञानिक, पहले विकारों का परीक्षण करते हैं। उसके बाद उन विकारों पर चिंतन करते हैं, फिर उस विकार को समझने के बाद उसके के अनुरूप ही चिकित्सा प्रणाली का चयन करते हैं। इस सब में एक लंबे समय की आवश्यकता होती है।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q6 मनोग्रस्ति और बाध्यता के बीच विभेद स्थापित कीजिए।

Answer. कभी-कभी किन्हीं लोगों को किसी चीज को छूने पर बार-बार हाथ सोते हुए आपने देखा होगा, या कपड़े को बार-बार झाड़ते हुए, यह मनोग्रस्ति बाध्यता विकार (ऑब्सेसिव कंपल्सिव डिसऑर्डर) पीड़ित होते हैं। वे कुछ विशिष्ट विचारों में अपनी ध्यानमग्नता नियंत्रित करने में असमर्थ होते हैं। अपने आप को बार-बार कोई विशेष क्रिया करने से रोक नहीं पाते हैं, यहां तक कि यह उनकी सामान्य गतिविधियों में भी बाधा पहुंचाते हैं। किसी विशेष विचार या विषय पर चिंतन को रोक पाने की असमर्थता मनोग्रस्ति व्यवहार कहलाता है। इससे ग्रसित व्यक्ति अक्सर अपने विचारों को अप्रिय और शर्मनाक समझता है। किसी व्यवहार को बार-बार करने की आवश्यकता बाध्यता व्यवहार कहलाता है। कई तरह की बाध्यता में गिनना, आदेश देना, जांचना, छूना और धोना सम्मिलित होते हैं। श्रेणी में शामिल अन्य विकार हैं- कंजूसी करना, बाल खींचना, खुजली करना आदि।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q7 क्या विसामान्य व्यवहार का एक दीर्घकालिक प्रतिरूप अपसामान्य समझा जा सकता है? इसकी व्याख्या कीजिए।

Answer. अपसामान्य का अर्थ होता है 'जो सामान्य से परे हो', इसका तात्पर्य हुआ जो स्पष्ट रूप से परिभाषित मानकों या मानदंडों से हट करे हो। मनोविज्ञान में हमारे पास मानव व्यवहार का कोई 'आदर्श मॉडल' या 'सामान्य मॉडल' नहीं है जिसे तुलना के आधार के रूप में उपयोग किया जा सके। सामान्य और अपसामान्य व्यवहार में विभेद करने के लिए कई उपागम प्रयुक्त हुए हैं। अपसामान्य व्यवहार, विचार और संवेग वह है जो उचित प्रकार्यों से संबंधित समाज के विचारों से काफी भिन्न हो। प्रत्येक समाज के कुछ मानक होते हैं जो समाज में उचित आचरण के लिए कथित या अकथित नियम होते हैं। वह व्यवहार, विचार और संवेग जो सामाजिक मानकों को तोड़ते हैं अपसामान्य कहे जाते हैं।

विसामान्य और अपसामान्य व्यवहार को सामाजिक सांस्कृतिक मॉडल से आसानी से समझा जा सकता है। क्योंकि व्यापार सामाजिक शक्तियों द्वारा ही विकसित होता है अतः ऐसे कारक जैसे कि परिवार संरचना और संप्रेषण, सामाजिक तंत्र, सामाजिक दशाएं, तथा सामाजिक नाम पत्र और भूमिकाएं अधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं। ऐसा देखा गया है कि कुछ पारिवारिक व्यवस्थाओं में व्यक्तियों में अपसामान्य व्यवहार उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है। कुछ परिवारों में ऐसी जालबद्ध संरचना होती है जिसमें परिवार के सदस्य एक दूसरे की गतिविधियों, विचारों और भावनाओं में कुछ ज्यादा ही अंतर्निहित होते हैं। इस तरह के परिवार के बच्चों को जीवन में स्वावलंबी होने की कठिनाई आ सकती है। इस से भी बड़े स्तर का सामाजिक तंत्र हो सकता है जिसमें व्यक्ति के सामाजिक और व्यावसायिक संबंध सम्मिलित होते हैं। कई अध्ययनों से यह पता चलता है कि जो लोग अलग-थलग महसूस करते हैं और जिन्हें सामाजिक अवलंब प्राप्त नहीं होता है अर्थात् गहन और संतुष्टिदायक

अंतर्व्यक्तिक संबंध जीवन में प्राप्त नहीं होता है, वे उन लोगों की अपेक्षा अधिक और लंबे समय तक अवसाद ग्रस्त हो सकते हैं जिनके अच्छे मित्रतापूर्ण संबंध होते हैं। सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांतकारों के अनुसार, जिन लोगों में कुछ समस्याएं होती हैं अपसामान्य व्यवहार की उत्पत्ति सामाजिक संज्ञाओं और भूमिकाओं से प्रभावित होती है। जब लोग समाज के मानकों को तोड़ते हैं तो उन्हें विसामान्य और मानसिक रोगी जैसी संज्ञाएँ दी जाती हैं। इस प्रकार की संज्ञा है इतनी ज्यादा उन लोगों से जुड़ जाती है कि लोग उन्हें सनकी इत्यादि पुकारने लगते हैं और उन्हें उसी बीमार की तरह से क्रिया करने के लिए उकसाते रहते हैं। धीरे धीरे वह व्यक्ति बीमार की भूमिका स्वीकार कर लेता है तथा अपसामान्य व्यवहार करने लगता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि विसामान्य व्यवहार का एक दीर्घकालिक प्रतिरूप अपसामान्य समझा जा सकता है।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q8 लोगों के बीच बात करते समय रोगी बारंबार विषय परिवर्तन करता है, क्या यह मनोविदलता का सकारात्मक या नकारात्मक लक्षण है? मनोविदलता के अन्य लक्षणों तथा उप-प्रकारों का वर्णन कीजिए।

Answer. विषय से दूसरे विषय पर तेजी से बदलना जो चिंतन की सामान्य संरचना को गड़बड़ कर देता है और यह तर्क हीन लगने लगता है, नए शब्दों या मुहावरों की खोज करना, एक ही विचार को अनुपयुक्त तरह से बार-बार दोहराना यह सब सकारात्मक मनोविदलता के औपचारिक चिंतन विकार(फॉर्मल थॉट डिसऑर्डर्स) के अंतर्गत आते हैं।

मनोविदलता के अन्य लक्षण में तीन श्रेणियां हैं पहला सकारात्मक लक्षण जिसमें विचार, संवेग और व्यवहार में अतिशयता होती है। दूसरा, नकारात्मक लक्षण जिसमें विचार, संवेग और व्यवहार में न्यूनता या कमी होती है। तथा तीसरा और आखिरी मनःचालित लक्षण होता है। सकारात्मक लक्षणों में व्यक्ति के व्यवहार में विकृत अतिशयता तथा विलक्षणता का बढ़ना पाया जाता है। भ्रमासक्ति, असंगठित चिंतन एवं भाषा, परिवर्धित प्रत्यक्षण और विभ्रम तथा अनुपयुक्त भाव मनोविदलता में सबसे अधिक पाए जाने वाले लक्षण हैं। इसके उप प्रकारों में उत्पीड़न भ्रमासक्ति, संदर्भ भ्रमासक्ति, अत्यहमन्यता भ्रमासक्ति, नियंत्रण भ्रमासक्ति है। दूसरा होता है नकारात्मक लक्षण इसमें विकट न्यूनता होते हैं जिनमें वाक अयोग्यता, विसंगति, एवं कुंठित भाव इच्छाशक्ति का हास और सामाजिक विनिवर्तन सम्मिलित होते हैं। तीसरा और अंतिम मनःचालित लक्षण भी प्रदर्शित करते हैं। वह स्वाभाविक रूप से चलते तथा विचित्र मुख विकृतियां एवं मुद्राएं प्रदर्शित करते हैं। इलेक्शन अपनी चरम सीमा को प्राप्त कर सकते हैं जिसे कैटाटोनिया कहते हैं। कैटाटोनिक जड़िमा की अवस्था में लंबे समय तक रोगी गति हीन और चुप रहता है। कुछ लोग कैटाटोनिक दृढ़ता और घंटों तक एक ही मुद्रा में रहना प्रदर्शित करते हैं। दूसरे अन्य रोगी कैटाटोनिक संस्थिति अर्थात विचित्र उटपटांग मुद्राओं को लंबे समय तक प्रदर्शित करते हैं।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q9 विच्छेदन से आप क्या समझते हैं? इसके विभिन्न रूपों का वर्णन कीजिए।

Answer. विचारों और संवेगों के बीच संयोजन विच्छेद का हो जाना विच्छेदन कहलाता है। विच्छेदन में आवास्तविकता की भावना, मनमुटाव या विरक्ति, व्यक्तित्व लोप और कभी-कभी स्मिता लोप या परिवर्तन भी पाया जाता है। चेतना में अचानक और अस्थायी परिवर्तन जो कष्ट कर अनुभवों को रोक देता है, विच्छेदी विकार कहलाता है। इस समूह में स्थितियां शामिल होती हैं- विच्छेदी स्मृतिलोप, विच्छेदी पहचान विकार, तथा व्यक्तित्व लोप।

विच्छेदी स्मृतिलोप में व्यक्ति अपनी महत्वपूर्ण, व्यक्तिगत सूचनाएं, जो अक्सर दबावपूर्ण और अभिघातक सूचना से संबंधित हो सकती हैं, का पुनः स्मरण करने में असमर्थ होता है। विस्मरण मात्रा सामान्य से परे होती है। इसकी आवश्यक विशेषताएं घर एवं कार्यस्थल से दूर यात्रा, एक नवीन पहचान का अनुमान और पूर्व पहचान को स्मरण करने की अयोग्यता हो सकती है। दूसरा व्यक्तित्व लोप या स्वानुभूति लोप विकार में व्यक्ति स्वयं की अवधारणा और वास्तविकता के बोध में बदलाव का अनुभव करता है। इस विकार में व्यक्ति प्रत्यावर्ती व्यक्तित्व की कल्पना करता है जो आपस में एक दूसरे के प्रति जानकारी रख सकते हैं या नहीं रख सकते हैं। तीसरा, विच्छेद ही पहचान या बहु व्यक्तित्व में व्यक्ति दो या अधिक भिन्न और वैषम्यात्मक व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है जो सामान्यता: शारीरिक दुर्यवहार की दुर्घटनाओं से जुड़ा होता है। दोनों रहेंगे हैं कबूतर से जिला योजना शहर होगा। इसमें आत्म प्रत्यक्षण में परिवर्तन होती है। व्यक्ति का वास्तविकता बोध और अस्थाई स्तर पर लुप्त हो जाता है।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q10 दुर्भिति क्या है? यदि किसी को सांप से अत्यधिक भय हो तो क्या यह सामान्य दुर्भिति दोषपूर्ण या गलत अधिगम के कारण हो सकता है? यह दुर्भिति किस प्रकार विकसित हुई होगी? विश्लेषण कीजिए।

Answer. किसी व्यक्ति को छिपकली के भय से कमरे में घुसने से मना कर दिया हो या किसी ने इमारत की दसवीं मंजिल पर सीढ़ी से जाने या लिफ्ट में चढ़ने से मना कर दिया हो ऐसे लोग ऐसी दुर्भिति का शिकार हुए होते हैं। आपने अपने किसी मित्र को श्रोताओं के सामने बोलते हुए देखा होगा की उसे घबराहट होने लगती है, नर्वस हो जाता है। इस तरह के भय दुर्भिति कहते हैं।

जिन लोगो को दुर्भिति होती है उन्हें किसी विशिष्ट वस्तु, लोग या स्थितियों के प्रति अविवेक या अतर्क भय होता है। दुर्भिति बहुधा धीरे-धीरे या सामान्यतः दुश्चिंता विकार से उत्पन्न होती है। दुर्भिति को मुख्यतः तीन प्रकार का माना जा सकता है- विशिष्ट दुर्भिति, सामाजिक दुर्भिति, विवृतिभीति। विशिष्ट दुर्भिति सामान्यता घटित होने वाली दुर्भिति होती है। इसमें अविवेकी या अतर्क भय जैसे किसी विशिष्ट प्रकार के जानवर के प्रति तीव्र भय का होना या किसी बंद जगह में होने के भय का होना सम्मिलित होते हैं। दूसरों बर्ताव करते समय तीव्र और अक्षम करने वाला भय तथा उलझन अनुभव करना सामाजिक दुश्चिंता विकार का लक्षण है। विवृतिभीति शब्द उस समय प्रयुक्त किया जाता है। जब अपरिचित स्थितियों में प्रवेश करने के भय से ग्रसित हो जाते हैं। विवृतिभीति से ग्रसित अधिकांश लोग अपने घर से निकलने में घबराते हैं। इसलिए जीवन की सामान्य गतिविधियों का निर्माण करने की उनकी योग्यता भी अत्यधिक सीमित हो जाती है।

सामान्यतः ऐसा कहा जा सकता है बार बार डराए जाने या किसी घटना का दिमाग पर गहरा असर हो जाने पर हुआ होगा। जिससे आगे चलकर ये देख जाने लगा और मनोवैज्ञानिक इसे समझने का प्रयास करने लगे।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q11 दुश्चिंता को "पेट में तितलियों का होना" जैसे अनुभूति कहा जाता है। किस अवस्था में दुश्चिंता विकार का रूप लेती है? इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।

Answer. दुश्चिंता का अनुभव तब होता है जब किसी परीक्षा की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं या किसी दंत चिकित्सक के पास जाना होता है या कोई एकल प्रदर्शन करना होता है। यह सामान्य है, जिसकी हमसे प्रत्याशा की जाती है। यहां तक कि इससे हमें अपना कार्य अच्छी तरह करने की अभिप्रेरणा भी मिलती है। इसके विपरीत जब उच्च स्तरीय दुश्चिंता जो कष्टप्रद होती है तथा हमारे सामान्य क्रियाकलापों में बाधा पहुंचाती है तब यह मनोवैज्ञानिक विकारों की सबसे सामान्य श्रेणी दुश्चिंता विकार की उपस्थिति का संकेत होती है।

प्रत्येक व्यक्ति को आकुलता और भय होते हैं। सामान्यतः दुश्चिंता शब्द को भय और आशंका की विसृत, अस्पष्ट और अप्रीतिकर भावना के रूप में परिभाषा किया जाता है। दुश्चिंतित व्यक्ति में निम्न लक्षणों का सम्मिलित रूप रहता है, यथा- हृदयगति का तेज़ होना, साँस की कमी होना, दस्त होना, भूख न लगना, बेहोशी, चक्कर आना, पसीना आना, निद्रा की कमी, बार बार मूत्र त्याग करना तथा कँपकँपी आना। दुश्चिंता विकार के कई प्रकार होते हैं। सामान्यीकृत दुश्चिंता विकार, आतंक विकार, सामाजिक दुश्चिंता विकार, वियोगज दुश्चिंता विकार आदि।

Page : 20 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

aglasem.com